अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





पिछड़ापन – उद्योग– कारण व समाधान
Backeardness - Industry, Causes & solution

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अध्याय शीर्षक	पिछड़ापन – उद्योग– कारण व समाधान
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Backeardness - Industry, Causes & solution**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पिछड़ापन – उद्योग– कारण व समाधान **Backeardness - Industry, Causes & solution**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पिछड़ापन – उद्योग– कारण व समाधान **Backeardness - Industry, Causes & solution**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – पिछड़ापन– उद्योग– कारण व समाधान का संक्षिप्त वर्णन

पिछड़ापन – उद्योग– कारण व समाधान **Backeardness - Industry, Causes & solution**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बान्दा उद्योग व औद्योगिक विकास

फरवरी 2023 के एक समाचार के अनुसार यूपी में निवेश की एक योजना चली और उस समाचार का हेडिंग था सबसे ज्यादा निवेश पश्चिमी यूपी के लिए

बुंदेलखण्ड क्षेत्र के लिए केवल 13 परसेंट जब के पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र के लिए 16811108.4 करोड़ के निवेश प्रस्ताव हैं और यह सोचा जाए की बुंदेलखण्ड और उसमें भी बान्दा का विकास होगा एक दिन और रात में देखा गया सपना ही है

बुंदेलखण्ड के चित्रकूट धाम मंडल के बान्दा में, उपसीडा/यूपीएसआईडीए/ उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्रधिकरण में, उद्योगों को बढ़ावा देने की पवित्र मंशा से स्थापित औद्योगिक स्थान में उद्योगों की स्थापना में बुनियादी समस्याएं रोड़ा बना दी गई है। लगभग 30 साल पहले (लगभग 1995–96) में स्थापित उपसीडा/यूपीएसआईडीए/ उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्रधिकरण में 25प्रतिशत उद्योग भूखण्ड आवन्टन के पश्चात भी स्थापित नहीं हो सके हैं। उनका उपयोग गोदाम, धार्मिक स्थल व अन्य कर्मो में हो रहा है।

औद्योगिक क्षेत्र की स्थिति

भूरागढ़ औद्योगिक क्षेत्र महोबा रोड कुल क्षेत्रफल	158 बीघा
भूरागढ़ में स्थित कुल भूखण्ड	171
भूरागढ़ में स्थित कुल इकाइयां	39
पुलिस लाइन औद्योगिक क्षेत्र कुल क्षेत्रफल	40 बीघा
पुलिस लाइन औद्योगिक क्षेत्र कुल भूखण्ड	25
पुलिस लाइन औद्योगिक क्षेत्र कुल इकाइयां	22

उपसीडा/यूपीएसआईडीए/ उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास प्रधिकरण में बिजली, पानी की समस्या के साथ मनमानी और सबसे बड़ी समस्या सरकारी विभागों के उदासीनता व स्वार्थ भी है। जिन लोगों ने उद्योग लगाए हैं और माल तैयार कर रहे हैं उनसे सरकारी विभाग माल कमीशन के चलते नहीं खरीदते। जिससे जिले में तैयार होने वाले उत्पादों व उद्योग को बढ़ावा नहीं मिल पा रहा है।

पुलिस लाइन के सामने स्थित ग्रामीण औद्योगिक अस्थान का कुल क्षेत्रफल 8.86 एकड़ है। 22 भूखण्ड/शेड आवन्टित है। तीन अभी भी खाली है। वीआईपी क्षेत्र में जो भूखण्ड आवंटित है, उनमें ज्यादातर में आवास, धार्मिक स्थल, गोदाम, कोल्ड स्टोरेज, इंजीनियरिंग वर्क्स, दाल कारखाना, बैग कैनवास निर्माण कारखाना, फर्नीचर निर्माण, ट्रैक्टर सर्विसिंग आदि ही चल रहे हैं। कुछ विशिष्ट कारणें से खाली भूखण्डों को आवंटित तो कर ही नहीं पा रही, वहीं जिन भूखण्डों का दुरुपयोग हो रहा है उनको किसी विशिष्ट स्वार्थ व कर्म से भी नहीं रोक पा रही है। यहां पर ऐसे उद्योग लगाने की आवश्यकता है जहां पानी की सबसे कम आवश्यकता हो। जलस्तर काफी नीचे होने से बोरिंग सफल कभी नहीं हो पाएगी।

भूरागढ़ औद्योगिक स्थान 158 बीघा में फैला हुआ है विभाग के कथन अनुसार 171 भूखण्डों में 161 इकाइयां स्थापित होने की योजना थी। 3 भूखण्ड आवन्टन हेतु खरीददार नहीं मिले। सोने में सुहागा यह कि आवन्टित किए गए औद्योगिक स्थान में महज 39इकाइयां ही काम कर रही हैं, जिनमें ऑक्सीजन प्लांट, नमकीन, लोहे के दरवाजे, नूडल्स कारोबार स्थापित हो सके हैं। शेष खाली पड़े हुए है। कुछ इकाइयां स्थापित करने के लिए भवन तो बने लेकिन कारोबार शुरू नहीं किया। इन भवनों में गोदाम आदि चल रहे है। उद्योगों को सुचारू रूप से चलने के लिए पानी आवश्यक है लेकिन यहां पानी की आपूर्ति का कोई साधन नहीं है।लगभग 500 मीटर की दूरी पर केन नदी से पानी क्यों नहीं ले सकते व रिसाइकिल कर पानी के दोहन कम कर सकते है। व नदी को प्रदूषित होने से बचा सकते है।

अमर उजाला पृष्ठ3 शुक्रवार 28 नवंबर 2025 संदर्भ

पिछड़ापन – उद्योग– कारण व समाधान **Backeardness - Industry, Causes & solution**

सन्दर्भ–2.01 2.02
खनिज

शजर बान्दा जिले की पहचान है। सन्दर्भ–2.02 उद्योग

शजर की खोज करीब 400 साल पहले बान्दा में हुई थी। इसे खोजने वाला एक अरब था । वह इसके रंग–बिरंगे पैटर्न से मंत्रमुग्ध हो गया जो पत्तियों और पेड़ों की तरह दिखते हैं और इसलिए उसने इसका नाम सज़र रखा(अरबी में इसका मतलब पेड़ होता है)। क्षेत्रीय स्पर्श के कारण, सज़र शजर बन गया। इसे उर्दू में हकीक(अकीक/हकीक/अकीक) और हिंदी में स्फटिक कहा जाता है ।

अंग्रेजी में शजर को डेंड्राइट एगेट के नाम से जाना जाता है। यह एक समान पत्थर है और अलग–अलग रंगों और पैटर्न में पाया जाता है।

डेंड्राइट ऑगेट(एगेट) शजर है और इसे ट्री ऑगेट(एगेट) और फंगस ऑगेट के नाम से भी जाना जाता है। यह विशेष रूप से बान्दा की केन नदी में पाया जाता है । पत्थर की विशेषता पत्तियों, पेड़ों, पहाड़ों, जानवरों, प्रतीकों आदि के रंगीन पैटर्न हैं। शजर के बारे में एक स्थानीय मिथक है। ऐसा माना जाता है कि पत्थर अपने सामने पड़ी किसी भी वस्तु की छाप लंबे समय तक छोड़ देता है। पर यह सच नहीं है। शजर पत्थर पर छवियों के निर्माण के पीछे एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। दरअसल, शजर पर जो पैटर्न हम देखते हैं, वह कुछ और नहीं बल्कि कवक(मूल रूप से शैवाल) के फंसे हुए जीवाश्म हैं। एक कवक, जो शजर पत्थर के दो या अधिक टुकड़ों के बीच फंस जाता है, या तो एसिड या बेस पैदा करता है। यह एसिड/बेस पत्थरों को पारभासी बनाता है और एक अकार्बनिक गोंद के रूप में कार्य करता है

अपनी विशिष्टता और धार्मिक सम्बन्धों के कारण, यह पत्थर आज भी विदेशों में निर्यात किया जाता है। शजर पत्थरों का एक बहुत छोटा उद्योग स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार की मांग को पूरा करता है। लेकिन पत्थर अभी भी मध्य–पूर्व में लोकप्रिय है और अगर इसे ठीक से बढ़ावा दिया जाए तो यह निर्यात कार्यक्रम की शत–प्रतिशत सफलता सुनिश्चित करता है।

निर्यातकों के अनुसार, दुनिया भर से हज यात्री सऊदी अरब में कुरान की आयतों के साथ शजर पत्थर की स्मृति चिन्ह ले जाते हैं। विडंबना यह है कि एजेंटों के माध्यम से बान्दा से निर्यात किया जाता है

महिमा और सुंदरता के इस पत्थर को इसकी उचित प्रशंसा और प्रसिद्धि मिलनी चाहिए। उद्योग को कुछ बड़ा बढ़ावा देने की आवश्यकता है, लेकिन सरकार की मदद के बिना यह लगभग असम्भव लगता है।

मटका टोकरी दरी भी बनती है।

उद्योग

बान्दा उद्योग

बान्दा के पलहरी स्थित बुन्देलखण्ड अपेक्स हैंडलूम हथकरखा उद्योग की 2000 ईस्वी में डाली गई थी। सुखाग्रस्त बुन्देलखण्ड में जहां लोगों को बड़ी संख्या में रोजगार मिला वहीं यहां के निर्माता उच्च कोटि की दरी, रजाई, खोल, कॉटन, योग चादर, आसनी (पूजा के समय बैठने के लिए) चद्दर आदि सिर्फ प्रदेश में ही नहीं वरन कोलकाता, मुंबई, बेंगलुरु और गोवा आदि शहरों में खूब पसंद की गई। जैसा कि सरकारी उद्योग के साथ होता है, नोटबन्दी के बाद यहां की तस्वीर बदल गई। मौजूदा समय में करोड़ों रुपए के इस बुनकर उद्योग में लगभग 300 से ज्यादा मजदूर काम करते हैं कहते हैं। नोटबन्दी के समय दिहाडी मजदूरों को मजदूरी के तौर पर लोगों के पास फुटकर पैसे देने की दिक्कत आ गई। माल एकत्र होने लगा समय के साथ भरपूर न सप्लाई होने के कारण मांग भी काम हो गई और जो सामान ले भी रहा था वह उधार मांग रहा था, उधार मांग रहा है। जिसके कारण हालात यह हो गए की कुछ

विशिष्ट कर्मी दूसरी जगह पर दूसरा काम करने लगे और यह काम छोड़ दिया। अब लोगों को घर का खर्च चलाना भी मुश्किल हो रहा है। सालों से यहां पर काम कर रहे लोग, इस मुश्किल वक्त में भी काम करेंगे, उम्मीद कम ही नजर आती है। फिर भी फेरी के लिए यहां के मजदूरों को तैयार की गई सामग्री को गलियों में बेचा जाता हुआ देखा जा सकता है।

6 सितंबर 2024 को बान्दा में छावनी स्थित एक हॉल में प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए बाजीराव पेशवा बान्दा नवाब के वंशज नवाब शादाब अली बहादुर इन्दौर से आए। जो कथित बान्दा के नवाब के वंशज हैं और उन्होंने कभी भी बान्दा के लिए कोई सहयोग नहीं किया। इस प्रदर्शनी में पुराने सिक्के और सजर पत्थर के कट पीस प्रदर्शित किए गए।

ओडी ओपी

जिले के ओडी ओपी एक जिला एक उत्पाद योजना में शामिल है इसमें पत्थर की कटिंग और प्रोसेस। इस योजना में शजर पत्थर की कटिंग और प्रोसेस करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। जिले में 1800 महिलाओं व पुरुषों को प्रशिक्षण दिया गया और प्रत्येक को ₹2000 और ₹20000 की कीमत की शजर किट बान्टी गई और प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण इतना काबिज और काबिल व उत्कृष्ट रहा कि कोई नया कारीगर या कारोबारी नहीं बन सका। लाभार्थियों के घर पर दी गई किट जिसकी कीमत ₹20000 थी, बेकार पड़ी हुई है। एक भी नया कारीगर नहीं आया नतीजा निल बटा सन्नाटा।

अमर उजाला 29 दिसंबर 2025 सोमवार

भोजन व उद्योग

बान्दा में स्वास्थ्यवर्धक और गुणकारी उत्पादों की कमी नहीं है। यहां वह सब उपलब्ध है जिसे मल्टीनेशनल कंपनी अपने उत्पादों के रूप में सुपर फूड के रुप में बेच रही है। लाल गेहूं जिसे कठिया भी बोला जाता है और ज्यादा लाल गेहूं जो लगभग काले रंग का होने लगता है, स्वास्थ्य के लिए सुपर फूड है। यद्यपि यह सूखी खेती का उत्पादन है अतः लाजिमी है कि उत्पादन बहुत कम होगाा ही। साथ ही वर्षा आधारित होने के कारण इसका स्वाद भी अप्रतिम होता है। सिंचाई से उतना स्वाद नहीं आता। अगर किसान इसे अपने व्यवसाय के तौर पर करता है तो निश्चित रूप से उसे उतना पैसा नहीं मिलेगा जितना आर आर 21 फॉर्म गेहूं के रूप में मिलता है व आता है। इसका महंगा होना लाजमी है फिर भी खाने वाले इसके दलिया को बहुत चाव खरीदते हुए खाने को कहते हैं बिना सिंचाई वाले खेत में उत्पादित दाल, बान्दा की स्थानीय अरहर दाल का स्वाद एक बार चख कर तो देखें! हाइब्रिड दालों से इसका स्वाद बहुत अलग है। आंवले का मुरब्बा व अचार अप्रतिम है। गेहूं चने का मिला आटा जिसे बिर्रा आटा भी कहा जाता है। इसके अलावा सुपर फूड जिसमें ज्वार, बाजरा, मटर, चना, मक्का, गेहूं, व कुछ अन्य विशेष दालों को मिलाकर बनाया जाता है, जो एक संपूर्ण भोजन है। जिसकी रोटी बनाकर नमक और घी के साथ भी खाया जाए तो किसी अन्य चीज की आवश्यकता नहीं है। यह सब चीजें बान्दा और आसपास के सुखे इलाके में बहुत फायदा वाली फसल होती है। इसके अलावा और भी बहुत सारे फल, अनाज इस इलाके में पैदा होते हैं जिनको विज्ञापन कर प्रचारित कर, इस इलाके को समृद्ध बना सकता है।

कताई मिल

उद्योग

कताई मिल, 20 अप्रैल 1981ई0, का यूपी स्टेट यार्न कंपनी लिमिटेड की कताई मिल की नींव रखी गई। 1983 तक मिल में 1300 मजदूरों को रोजगार मिला और लगभग 45 लाख रुपए का 10,000 किलो धागा रोजाना बनकर निकलता था। 15 साल चलने के पश्चात 1992ई0 में मिल को बीमार घोषित कर दिया गया। आश्चर्य की बात थी कि इसको चलाने वाले भारत के सर्वाधिक सक्षम आईएएस ऑफिसर थे और उनके सक्षमता के कारण 1992ई0 में मिल को बीमार घोषित किया गया धीरे–धीरे मिल का उत्पादन घटा और 3 दिसंबर 1998ई0 को अर्थात 15 साल के बाद इसे बन्द घोषित कर दिया गया। तब से और अभी तक कोई भी औद्योगिक इकाई नहीं लगाई गई और मानव श्रम बान्दा से हटकर सूरत और अन्य स्थानों पर जाने लग गया और पूरा बान्दा जो बुन्देलखण्ड में सबसे पिछड़ा जिला था, रहा और रह गया।